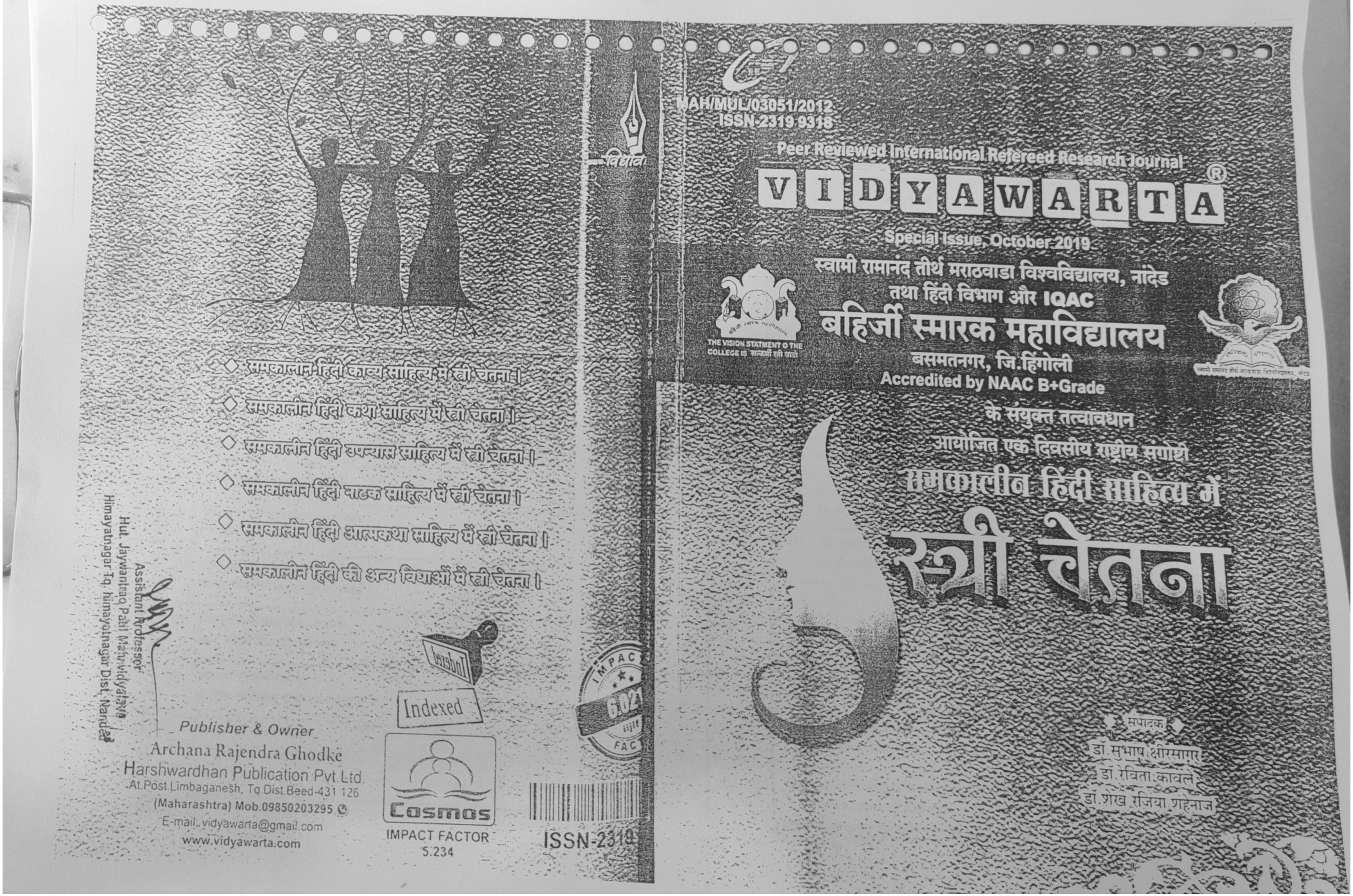

Scanned with ACE Scanner

२. कहानी विधा

24) मंजूर एहतेशाम के कथा साहित्य में नारी चेतना
फिरोज बालसिंग, जाकिर हुसैन गुलगुंदी, धारवाड ||76

25) समकालिन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री चेतना
प्रा. नयन भादुले -राजमाने, लातूर ||78

26) सुधा अरोडा की कहानी में स्त्री चेतना
अर्चना रमेशचंद्र बंग-सोमाणी, परभणी ||81

27) उषा प्रियंवदा की कहानियों में नारी चित्रण
बलांडे स्वर्णा तुकाराम, लातुर ||82

28) चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी चेतना
डॉ. बायजा कोटुळे, बीड ||84

29) नासिरा शर्मा के कहानियों में स्त्री चेतना
प्रा. यु. ए. बिरादार, नांदेड ||87

30) अलका सरावगी के कथासाहित्य में चित्रित नारी संघर्ष
ज्योती शशिकांत कांबळे, औरंगाबाद ||88

31) मालती जोशी के कथा साहित्य में नारी चेतना
प्रा. कल्याण शिवाजीराव पाटील, नांदेड ||90

32) समकालिन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री चेतना
प्रा.डॉ. पवन नागनाथराव एमेकर, नांदेड ||92

33) चित्रा मुदगल की कहानियों में स्त्री चेतना
प्रदीप सोपान खिल्लारे, औरंगाबाद ||94

34) 'और अब' कहानी में नारी चेतना
डॉ. पुष्पा गोविंदराव गायकवाड, देगलूर ||96

35) नारी चेतना की दास्तान 'कठगुलाब'
डॉ. रविता बलभीम कावळे, हिंगोली ||97

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

36) मंजुल भगत की कहानी 'पायदान' में व्यक्त नारी चेतना
प्रा. डॉ. शे. रज़िया शहेनाज़ शे. अब्दुला, हिंगोली ||99

37) मृणाल पाण्डे कृत 'देवी' उपन्यास में स्त्री चेतना का आंदोलनात्मक रुप
संजीव मुकिंदराव कदम, नांदेड ||102

38) मेहरुन्निसा परवेज के कथा साहित्य में नारी समस्या
डॉ.शेख हुसैन मैनोद्दीन, उदगीर ||104

39) नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में स्त्री चेतना
डॉ. जहीरूद्दिन रफियोद्दिन पठान, शेख परवीन बेगम शेख इब्राहीम, नांदेड ||106

40) ओमप्रकाश वाल्मीकी की कहानियों में विद्रोही दलित महिला
प्रा. डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे, नांदेड ||109

41) साहित्य अमृत पत्रिका की कहानियों में स्त्री-चेतना
सोनाली तेरदाले, जाकिर हुसैन गुलगुंदी, धारवाड ||111

42) समकालीन महिला लेखिकाओं की कहानियों में स्त्री विमर्श
श्री. तुकाराम वसराम आडे, हिंगोली ||112

43) डॉ. रामदरश मिश्र के कहानियों में स्त्री चेतना
प्रा. डॉ. वंदन बा. जाधव, बीड ||114

44) 'गौरी' कहानी में नारी चेतना
प्रा. डॉ. वसंत माळी, औरंगाबाद ||116

३. उपन्यास विधा

45) समकालीन हिंदी उपन्यास साहित्य में स्त्री चेतना
श्वेत लता, जमशेदपुर ||119

46) 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में नारी चेतना
डॉ. शीला भस्कर, हुबली ||121

47) आदिवासी केन्द्रित उपन्यास : नारी विषयक दृष्टिकोण
श्रीकांत राठोड, डॉ. झाकिर हुसेन गुलगुंदी, धारवाड ||124

Scanned with ACE Scanner

40

ओमप्रकाश वाल्मीकी की कहानियों में विद्रोही दलित महिला

प्रा. डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे
हिन्दी विभाग प्रमुख,
हु.जयवंतराव पाटील महाविद्यालय, हिमायतनगर जि.नांदेड.

भारतीय समाज व्यवस्था में नारी जाति को विशेष महत्तव दिया गया है। उसे कभी देवी या माता के रुप में पुजा जाता है। प्राचीन काल में स्त्री स्वतंत्रता ओर उसकी गरिमा को महत्त्व दिया जाता था। परंतु हिन्दू धर्म ग्रंथों ने स्त्री और शूद्र को हीन माना गया। वर्ण-व्यवस्था में उसे केवल भोग्य को वस्तु माना है, उसे सार्वजनिक अस्तीत्व और स्वातंत्र्य को नकारा गया। नारी जाति दुनिया आधा हिस्सा है। फिर भी प्राचीन काल से आज तक वह वर्णव्यवस्था के कारण जातिय हिनता बोध ओर अपने ही घर में अपने पुरुषों की सड़ी मानसिकता के कारण दलित या सर्वण स्त्री भी गुलामी की दास्यता में अपनी जिन्दगी जी रही थी। रामायण और महाभारत के काल में स्त्री सो फिसदी चहुओर से गुलाम बनी हुई थी। भारतीय समाज में उसे 'अबला' माना गया। प्राचीन भारत में आर्य आने के पूर्व नारी को पूर्ण आजादी दी जाती थी। परंतु वैदिक कालखण्ड में धार्मिक कर्मकाण्डों से भरे संस्कारों के कारण नारी स्वतंत्रता को नकारा गया। प्राचीन वैदिक संहिता मनुस्मृति तथा पराशरस्मृति ग्रंथों में स्त्री को और शूद्र को सभी सुख और सुविधा से दूर रखा गया। मुसलमान शासन में नया ब्रिटिश शासन कुछ हद तक परिवर्तन आना आरंभ हुआ। ब्रिटिशों के आधुनिक विचारधारा के कारण, भारतीय समाज सुधारकों के कारण शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ। इसी दौरान पुणे में क्रांतिकारी महात्मा फुले और क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले का सर्वप्रथम स्कुल खोलकर सभी जाति-पाति की महिलाएं और शूद्र को बढ़ाने का प्रचार किया। इनके इस शैक्षिक आंदोलन के कारण ही आज की महिला पढ़-लिखकर हर क्षेत्र में पुरुषों के बराबर अपना योगदान दे रही है। वर्तमान में महिला भारतीय संविधान में दिये गये विशेष अधिकारों के कारण ही सुरक्षित जीवन जी रही है।

भारतीय समाज में दो प्रकार की पीड़ित महिलाएं है, एक दलित जो वर्णव्यवस्था और अपने पुरुषी अहंकारों की दोहरी शिकार बनी है और दुसरी सवर्ण नारी है, जो अपने केवल पुरुषी सत्ता की शिकार बनी है। इनके दोनों के अस्तीत्व की वर्णव्यवस्था में कोई स्थान नही है। ओमप्रकाशन वाल्मीकि की कहानियों में दलित महिलाएं है जो जातियता की, दरिद्रता की, सामाजिक अपमान की, अनपढ़ होने की, सर्वण पुरुषों की वासनांद आँखों की हमेशा से ही शिकार बनती आयी है। इस बात का चित्रण कहानियों में लेखन ने किया है। ऐसी प्रताडित दलित महिलांए अपना आत्मसम्मन और निलाम होती हुई इज्जत को बचाने के लिए समय-समय पर ऐसे असामाजिक तत्त्वों के साथ मुहतोड मुकाबला और संघर्ष कर अपनी गरिमा और इज्जत को बचाती है। ऐसी विद्रोही और संघर्षपरायण नारी का वास्तविक आत्मसम्मान भरा चित्रण 'अम्मा; यह अन्त नही;' खानाबदेश और जंगल की राणी आदि कहानियों में किया है। प्राचीन काल से लेकर आज तक दलित महिलाए सवर्णो के खेतों में ईंट भट्टे पर, सवर्णो के घरों में, और दफ्तरों में सवर्ण मानसिकता का शिकार आए दिन हाती आ रही है। इसका चित्रण कहानियों में मिलता है। इसिलिए ओमप्रकाश की कहानियाँ अधिक प्रासंगिक बन पड़ी है।

अम्मा : ओमप्रकाश वाल्मीकि लिखित 'अम्मा' कहानी में अम्मा के माध्यम से दलित महिला सर्वण मानसिकता के सामने अपने आत्मसम्मान और इज्जत को बचाने के लिए मिसेज चोपड़ा के यर को खरी खेटी सुनाकर झाड़ू के कनस्तर से ठोंककर उसके चंगुल से अपनी मुक्ति कर लेती है। इसको वास्तविक विद्रोह 'अम्मा' के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ है। कहानी मे 'अम्मा' वडिलोपार्जित व्यवसाय सवर्णो के घरों में टट्टी साफ करने का काम करती है। इसी मे अपने परिवार का गुजारा कर लेती है। यही व्यवसाय उसके पुरखे भी करते थे। और उसकी सास भी यहीं काम करती थी। पिछले अनेक सालों से यह काम मिसेज चोपड़ा के घर में करती थी। इस काम से अम्मा को अच्छी आमदनी मिलती थी। मिसेज चोपड़ा अम्मा पर अपने घर के सदस्य की तरह विश्वास किया करती थी और अम्मा भी इसी विश्वास पर खरी उतरी हुई थी। पर एक दिन अम्मा ने मिसेज चोपडा को घर में बुरी और गलत अवस्था में देखकर चौक जाती है। मिसेज चोपड़ा के घर में गलत अवस्था में देखकर चौक जाती है। मिसेज चोपड़ा के घर से कोई व्यक्ति विनोद नाम का व्यक्ति हमेशा आता-जाता था। अर्थात मिसेज चोपड़ा और विनोद के कितने दिनों से नायायज सम्बन्ध थे। एक दिन मिसेज चोपड़ा को नहाते हुए बाथरुम में देखकर उसक मौके का नायायज फायदा उठाकर विनोद ने अम्मा का हाथ पकड़कर जबर्दस्ती करने लगा। पाणी डालने की बजाय उसने अम्मा को कमर मे हाथ डालकर झटके से उसे अपनी और खींचा अम्मा इस हरकत से हड़बड़ा गई और चीखकर बोली क्या करते हो यह छोडो छूटने के लिए कसमसाने लगी।

अम्मा ने विनोद के इस गंधी हरकत से छूटकारा पाने के लिए "आदमखोर विनोद ने अम्मा को कसकर दबोच लिया था। उसका बंधन ढीला करने के लिए जोर लगा रही थी। जैसे ही विनोद की पकड़ कमजोर हुई उसे जोर से झटका देकर उसने खुद को मुक्त

Scanned with ACE Scanner

कर लिया हाथ में थमी झाडू को मूठ पर हथेली थम गयी पुरी ताकत से झाडू का वार सीध उसकी कनपटी पर किया चोट लगते ही वह लड़खड़ा गया और फर्श पर गिर पड़ था। अम्मा की झाडू पड़ रही थी और मुँह से गालियाँ फूट रही थी।"[१]

इस घटना से अम्मा मिसेज चोपड़ा के घर का काम छोड़ देती है और यह काम बीस रुपये मे हरदोई को बेच देती है। मिसेज चोपड़ा के घर का कामं अम्मा को उसकी सांस से विरासत में मिला था। अम्मा अपने काम न करने का और मिसेज चोपड़ा का घर छोड़ने का कारण हरदोई को बताती है। तब हरदोई कहती है- "तू तो मुर्ख है नासपिट्टी अपनी मा के यार को टट्टी मे घसीट लेती। पहले उतरवाती उसके कपडे कि आ तुझे करवा दूँ मखूरी की सैर। फिर करवाती उससे थिगनह का नाच। झाडू से पीट-पीट कर साले कुत्ते कू सड़क पे लि आती।" इसी तरह से ओमप्रकाश वाल्मीकि ने दलित महिलाओं में व्यवस्था के विरोध मे विद्रोह करने का साहस दिखाया है। आज भी इसी तरह की घटनाएँ दलित महिलाओं के साथ होता हुआ दिखाई देता है। अम्मा का यह विद्रोह आज की महिलाओं को प्रेरणादायी है।

यह अन्त नही : प्रस्तुत कहानी में खेत मे काम करनेवाली महिला को आए दिन सवर्ण जमींदार मालिक वासना का शिकार होना पडता है। यह आज भी देहातों में होता है। इसलिए यह अन्त नी कहानी का चित्रण अत्यंत प्रासंगिक बना है। कहानी में मंगल की लड़की बिरमा और उसकी माँ गाँव के जमींदारों के खेतो मे धान बुआई और कटाई का काम करती रहती है। एक दिन बिरमा अकेली खेत में काम करके जल्दी घर वापसी को निकलती है। बिरमा को अकेली देखकर गाव का जमींदार तेजभान का लड़का सचिन्दर बिरमा का हाथ पकड़कर उसको छेड़खानी करने लगता है। तब रस्ते में ही बिरमा ने अपने पास की धान की गढ्ढी सचिन्दर के अंग पर फेंकर उसके जांघों पर जोर से पैर का जबरस्त घुस्सा मारते हुए अपना बचाव भेड़िय के चंगुल से कर लेती है और अपने घर में आकर अपने भाई किसन को सब कुछ घटी बत बताती है। यह बिरमा का वर्णव्यवस्था और सवर्णो की सड़ी गली मानसिकता पर तमाचा है। बिरमा का यह विद्रोह दलित महिला के स्वाभीमान का प्रतिक है। दलितों की बाल-बेटियों के साथ आज भी अन्याय अत्याचार होते है, जो कभी बिरमा पर हुआ था। वह कहानी के अंत में अपना इस सडी व्यवस्था पर विद्रोह व्यक्त करते हुए कहती है- "इस हार पर मुँह क्यों लटका रहे हो... तुम लोगों ने मेरे विश्वास को जगाया है... इसे मरने मत देना।"[२]

खानाबदोश : प्रस्तुत कहानी में लेखक ने ईट भट्टी में काम करनेवाली दलित महिला का शोषण सवर्णो की ओर से किस प्रकार होता है। और उससे बचने के लिए और अपने स्वाभिमान को जागृत रखने के लिए मानो ने सुबेसिंह की वासनांधता से विद्रोह किया। वह किसनी की तरह सुबेसिंह की गुलाम बनकर जीना नहीं चाहती है। वह समजदारी और हुशारी से अपने आप को चालाकी से सुबेसिंह के चंगुल से बचती है।

किसनी की तरह जमींनदार का लड़का सुबेसिंह ने ईट भट्टे पर काम करनेवाली मानो पर अपनी बुरी नजर डालकर अपने हवस का शिकार बनाना चाहता था। इसी कारण वह एक दिन मानों को अपने पास बुलाता है पर उसके बदले मे उसने अपने पति को सुबेसिंह के पास भेज दिया था। मानों की इस चालाकी से सुबेसिंह के तेवर अधिक तिखे होते है और उसने जसदेव की बुरी ततरह से पिटाई की। जसदेव सुबेसिंह के पास जाकर कहता है- "जी... जो काम हा बताइए... मैं कर दूँगा जसदेव ने बड़ी विनम्रता से सुबेसिंह से कहा।"[३] इस प्रकार कहानी में सुबेसिंह ने मानों को अपनाने के लिए अनेक हथकंड़े अपनाए पर मानो उसके हाथों में नही आ सकी। मानों का सुबेसिंह के विरोध में उसके चंगुल से बचने के लिए अपनाए गये हथकंडे ही उसका व्यवस्था के प्रति का विरोध है। आज भी अनेक दलित महिलाएँ ईट भट्टी पर काम करनेवाली सुबेसिंह की नयी पीढ़ी के हाथों में लज्जित की जा रही है। यह कहानी भी अत्यंत प्रासंगिक है।

जंगल की रानी : आज की स्त्री को डॉ.बाबासाहब अंबेडकरजी द्वारा लिखे गए भारतीय संविधान ने पुरुषों के बराबरी का हक्क और अधिकार दिया है। इसीलिए शिक्षित दलित महिलाएं अनेक सरकारी एवं नीजि क्षेत्र में और उसके दफ्तरों में काम करती है। पर वह जग भी दलित महिलाओं के लिए सुरक्षित नही रही है। वे महिलाएँ अपने ही दप्तर के बड़े अफसरों की वासना का शिकार बन रही है। और कुछेक महिलाएं इनसे विद्रोह कर अपनी इज्जत और आत्मसम्मान बचाती है। कहानी में कमली का व्यक्तित्व अत्यंत विद्रोह से भरा पड़ा है। कमली लडकर मरना पसंत करती है पर व्यवस्था के दावेदारों के हाथों से निलाम नही होती है। यह कमली की विशेषता है।

प्रस्तुत कहानी में कमली युवती है, वह एक स्कूल में शिक्षिका है, वर्तमान में कोई भी ओहदा हो वह वसीले के बिना नही मिलता है। कहानी की नायिका कमली को स्कूल में शिक्षिका का पद जीवन वानखेडे नायक हेड़मास्टर की शिफारिश से मिलता है। किसी दिन स्कूल का मुआयना करने लिए डिप्टी साहब स्कूल में आते है, तब स्कूल मे शिक्षिका कमली को देखकर उसके होश उड़ जाते है, उससे प्रभावित होकर किसी तरह से उसे अपने शिकंजे में फसाना चाहता है उसकी कमली पर बुरी नजर होती है। डिप्टी साहब ने कमली की काफी पूछताछी थी। डिप्टी साहब कमली को हर हालात में पाना चाहते है।

इस हेतु से कमली को अपने शिकंजे में फंसाने के लिए 'ग्रामीण महिला प्रशिक्षण शिबिर में सहभाग लेने के लिए शहर में भिजवाया जाता है। कमली शहर में रात देर से पहूँचते ही साडे दस

बजे डिप्टी साहब के लोग कमली को उठाकर विश्रामगृह ले जाते है। कमली आते ही डिप्टी साहब, एस.पी.और विधायक पहले से ही उसका बेसब्री से भूखें तेंदुए की तरह एक साथ कमली पर झड़प मारते है। परंतु कमली इस तीनों से भी झगड़ती है। और कहानी के अन्त में आखिरकार एस.पी.ने कमली का गला दबोचकर मरोड़ता है, जिससे वह असहाय सी होकर अपना दम तोड़ देती है। इसी तरह कमली ने व्यवस्था के तीनों खुंखार भेडियों के हमले से मर जाती है, पर वास्तव में कमली आत्मसम्मानी होने के कारण वर्णव्यवस्था के हाथों बिकती नही। उसका यह आत्मसम्मान ही बहुत बड़ा विद्रोह है। इस अन्याय के विरोध में 'नया सबेरा' समाचार पत्र के संपादक ने आवाज उठाया था तो उसे भी मरवाया जाता है। इस भयानकता का चित्रण कहानी में मिलता है। "फोन की घंटी ने डिप्टी साहब की विचार तन्द्रा को खंडित कर दिया था। एस.पी. साहब डिप्टी साहब को खुश खबरी दे रहे थे फोन पर। 'नया सबेरा का संपादक अस्पताल में अंतिम सांसे गिन रहा है।"[४]

सारांश : डॉ.बाबासाहब अंबेडकर ने एक स्थान पर कहा था कि स्त्री दलितों में भी दलित है। इसी तरह से दलित स्त्री के सभी अधिकार छीन लिए गए थे केवल उनका हर तरह से शोषण ही शोषण बाकी था। सदियों से लेकर आजतक भारतीय संवैधानिक अधिकारों को प्राप्तकरने के बावजूद भी आज महिलांए हर जगह असुरक्षित है। दलित महिलाओं का अन्दर-बाहर, घर और घर के बाहर व्यवस्था के दावेदारों के वासनांधता का शिकार बनती है। उसका उत्पीड़न हर जगह होता हे। दलित महिला खेत खलिहानों, में सवर्णो के घरो में, इट भट्टे में, या दप्तरों में मौजुदा कार्यरत मेहनतकश महिलाओं का लैंगिक शोषण और बलात्कार का शिकार होती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियों में अम्मा, बिरमा, कमली, और मानो जैसी आत्मसम्मानी दलित महिलाएँ आपनं आप को अनेक वारदातों से स्वयं विद्रोह करके अपनी इज्जत को बचाती है। कमली जैसे स्वाभिमानी नौकरी करनेवाली अनेक महिलाएँ अपने आपको मरना पसंद करती है, पर व्यवस्था के सामने झुकती नही। आदि विद्रोही दलित महिलाओं का चित्रण बडे मार्मिक और वास्तविकता से लेखक ने किया है।

सन्दर्भग्रंथ सूचि :

१. सलाम-ओमप्रकाश वाल्मीकि
२. घुसपैठिए- ओमप्रकाश वाल्मीकि
३. घुपैठिए-ओमप्रकाश वाल्मीकि
४. सलाम- ओमप्रकाश वाल्मीकि
५. घुपैठिए-ओमप्रकाश वाल्मीकि
६. दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र-शरणकुमार लिंबाळे
७. दलित चेतना-रमणिक
८. ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत-जूठन के दो चेहरे-मलूकचंद बैजीवाल

□□□

41

साहित्य अमृत पत्रिका की कहानियों …
स्त्री-चेतना

सोनाली तेरदाले
हिंदी विभाग,
शोध छात्रा, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

जाकिर हुसैन गुलगुंदी
शोध निर्देशक, हिंदी विभाग,
कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड

****

२१ वीं सदि के आरंभिक दौर में हम स्त्री आंदोलन
मौजुदगी को पाते हैं। हिंदी के हर एक क्षेत्र में संदर्भ में यह आंदोलन
महत्वपूर्ण है क्योंकि यह क्षेत्र सामाजिक चेतना की दृष्टि से देश
अन्य हिस्सों की अपेक्षा में कुछ पिछड़ा हुआ था। लेकिन सामाजि
आजादी और देश की पराधीनता से मुक्ति का जो आन्दोलन २०
सदी की स्त्रीयों ने किए हैं, उन स्त्रीयों की चर्चा अधूरी होगी जो ह
समकालीन स्त्रीयों की विमर्श की चर्चा नहीं करेंगे।

२१ वीं सदी के प्रारंभिक दशक में सबसे बड़ी विशेषता य
थी कि स्वयं स्त्रीयों ने अपनी सामजिक पराधीनता को पहचाना अ
दूर करने का प्रयास किया। खुद को मुक्ति का चिंता नहीं की ब
अपनी शक्ति के साथ भारतीय स्वाधीनता संग्राम में भी अपनाए ज
बनाया और आज भी बना रही है। स्त्री अपने जीवन में आगे बढ़ र
है। जिसे साहित्य अमृत पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में देखते हैं

'विद्या का वेवा' कहानी में विशाखा अतुल से शादी कर
है। परिवार को संभालती है। बेटो का शादि के उपरांत विशाखा अप
जीवन साथी को खो देती है। उसके बाद विशाखा का जीवन नरक ब
जाता है। बेटी द्वारा विशाखा पर शोषण होता है। जिससे विशाखा घ
छोड़कर चली जाती है। अपना अलग सा जीवन बसा लेती है।

एक परिवार के लिए स्त्री अपना अस्तित्व खो देती है
दुःख को सहती है। कहने का तात्पर्य यह है कि स्त्री सहनशीलता की
दासी है। परोपकारिणी है। विशाखा चाहे तो इतने शोषण के बाद खुद
को मिटा सकती थी लेकिन विशाखा समस्याओं का सामना करके
अपने जीवन में आगे बढती है।

समाज स्त्री को अकेले जीवन यापन करने नहीं देती है।
एक स्त्री जब अपने जीवन में कुछ निर्णय लेना भी चाहती है तो समाज

Scanned with ACE Scanner